

DR. B. N. SINGH

ASSOCIATE PROFESSOR

DE.P → PHILOSOPHY

SOGHRA COLLEGE

BIHAR SHARIF (NALANDA)

(PHILOSOPHY-
PART-1)

9. जैन दर्शन के बंधन-मोक्ष सम्बन्धी अवधारणा की व्याख्या कीजिये।

Explain Jain Conception of Bondage and Liberation.

Ans → भारतीय दर्शन में बंधन का अर्थ है जन्म-मरण के चक्र में पड़ना। जैन दर्शनिकों ने भी बंधन के इस सामान्य अर्थ को स्वीकारा है। यों तो जैनों ने जीव को मौलिक रूप में अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति एवं अनन्त आनन्द से युक्त माना है, परन्तु अपने कर्मों के कारण जीव को शरीर धारण करना पड़ता है और वह बंधन में पड़ जाता है। जैन विद्वानों ने अनेक प्रकार के कर्मों को माना है और उनके अनुसार सन्तुष्ट के जोन, नाम एवं आयु भी कर्मों द्वारा ही निर्धारित होते हैं। जैन दर्शन कर्मवाद में विश्वास करता है और उसी यह मान्यता है कि अच्छे कर्मों के लिए अच्छा फल एवं बुरे कर्मों के लिए बुरा फल मिलना आवश्यक है। अज्ञानमत्तवश जीव कुछ कुप्रवृत्तियों का दास हो जाता है और उसे बंधन में रहना पड़ता है। इन कुप्रवृत्तियों को जैन दर्शन में 'कषाय' कहा गया है।

ये कुप्रवृत्तियाँ हैं - क्रोध (Anger), मान (Pride) लोभ (Greed) और काम या वासना (Infatuation or Passion) ये चारों जीव को तृष्णा है और इनसे एक ऐसी इच्छा जागती है जिसकी पूर्ति के लिए कर्म पुद्गलों जीव के चारों ओर इकट्ठे होते हैं इस क्रिया को आक्रव (Influx) कहा गया है। यह आक्रव ही बंधन का वास्तविक कारण है। जैन दर्शनिकों ने दो प्रकार के बंधन माने हैं—

(i) भाव-बंधन: मन में बुरे भावों की उत्पत्ति से ही भाव बंधन होता है।

(ii) द्रव्य बंधन: जब कर्म पुद्गलों का जीव के साथ वास्तविक संबंध हो जाता है तो वह द्रव्य बंधन कहलाता है। बंधन की स्थिति में कर्म पुद्गल जीव के साथ अग्रेद रूप से जुल-मिल जाता है जिस प्रकार पानी दूध के साथ या आटा लोहे के गोले के साथ मिल जाती है।

अतः जीव और कर्म पुद्गल एक दूसरे से अलग हो जायें तो जीव के लिए वह स्थिति ही "मोक्ष" है। इस स्थिति की प्राप्ति के लिए जीव में जो पुद्गल कर्मों का आश्रय होगा, उस क्रिया को रोकना होगा। इसे जैनिश्यों के संवर कहा है। संवर भी दो प्रकार के होते हैं - 'भाव-संवर' तथा 'द्रव्य संवर'। संवर से तो जीव में नये कषात्रों का जाना रूक जायगा, परन्तु जो कुप्रवृत्तियाँ पहले से ही जीव में वर्तमान हैं उन्हें निकालना भी आवश्यक है - इस क्रिया को 'निर्जर' कहा जाता है। संवर तथा निर्जर की प्रक्रिया से जब कर्म पुद्गल के अन्तिम कण का नाश हो जाता है तब जीव और पुद्गल के बीच ही हिस्सेदारी समाप्त हो जाती है और जीव अपने मौलिक रूप से आकर चमकने लगता है। इसी अवस्था को मोक्ष कहा जाता है।

इस मोक्ष प्राप्ति के मार्ग का तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम श्लोक में ही आचार्य गृह्यपिच्छ ने उल्लेख किया है, 'सम्यग्दर्शनं ज्ञानं चरित्राणि मोक्ष मार्गः' यानि उचित दर्शन, उचित ज्ञान, उचित चरित्र ही मोक्ष का मार्ग है। इन तीनों का वर्णन आवश्यक है। a

- ① सम्यक् दर्शन (Right faith)
- ② सम्यक् ज्ञान (Right Knowledge)
- ③ सम्यक् चरित्र (Right Conduct)

① सम्पूर्ण दर्शन (Right Faith) - तत्त्व ज्ञान के प्राप्ति विश्वास या आस्था ही सम्पूर्ण दर्शन है। साधक को तीर्थकारों के आदेशों पर विश्वास रखना चाहिए। यहाँ विश्वास का मतलब अंधविश्वास नहीं है। पश्चात्त दार्शनिक भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि ज्ञान प्राप्ति के कुछ हद तक विश्वास आवश्यक है।

② सम्पूर्ण ज्ञान (Right Knowledge) - विश्वास के साथ ज्ञान आवश्यक है। अज्ञान बन्धन का मूल कारण है अतः ज्ञान मोक्ष के लिए आवश्यक है। जीव और सजीव का अन्तर समझना आवश्यक है। इस अन्तर का ज्ञान नहीं रहने से पुद्गल कणों का आक्रान्त होना है, अतः आक्रान्त को रोकने के लिए ज्ञान आवश्यक है।

③ सम्पूर्ण चरित्र (Right Conduct): ज्ञान एवं विश्वास को सिर्फै सैद्धांतिक है। जब तक इसे व्यवहार में नहीं लाया जाय वे व्यर्थ हैं। इसलिए प्राप्त ज्ञान के आधार पर चरित्र का निर्माण करना भी आवश्यक बनलाया गया है। बोलने में चलने-फिरने में मिथ्या माँगों में सतर्कता रखना चाहिए। इसे समिति कहते हैं। मन, कचन, कर्म को नियंत्रित रखना पड़ेगा - इसे गुप्ति कहते हैं। ठीक इसी प्रकार दस धर्म अनुप्रेक्षा परिग्रह, धर्मानुष्ठा और पंच महाव्रत का पालन करना पड़ेगा। इसी व्रतों में पाँच महाव्रत - अहिंसा, सत्य, अस्त्रेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य की प्रधानता सभी दार्शनिकों ने स्वीकारा है साथ ही उपनिषद् एवं बौद्ध दर्शन में भी पंचशील के रूप में इनका वर्णन हुआ है इसलिए पाँच व्रतों का वर्णन आवश्यक है -

(क) अहिंसा (Non-violence): जैन दर्शन में अहिंसा का प्रयोग विशेष अर्थ में हुआ है किसी जीव को किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुँचाना ही अहिंसा है।

(ख) सत्य (Truthfulness) :- असत्य का त्याग एवं सत्य का पालन भी एक व्रत है। हम मोह, राग, द्वेष के कारण असत्य बोलते हैं और ये सभी अन्धन के कारण हैं। इसलिए हमें असत्य का त्याग और सत्य का पालन करना चाहिए।

(ग) अपरिग्रह (Non-acceptance) - विषयासक्ति का त्याग ही अपरिग्रह है। मनुष्य को लालच से बचना चाहिए। उन्हें सिर्फ़ उन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति के करनी चाहिये जो जीवन को कायम रखने के लिए आवश्यक हैं।

(घ) अस्तेय (Non-stealing) - जैन दर्शन में चन को मनुष्य का बाल जीवन माना गया है इसलिए किसी का धन चुराना उसकी हत्या करने के समान है बिना किसी की मर्जी के न तो उसकी चीज लेनी चाहिए और न आवश्यकता से अधिक इकट्ठा करना चाहिये।

(ङ) ब्रह्मचर्य (Self-control) - वासनाओं का त्याग एवं इन्द्रियों पर नियंत्रण ही ब्रह्मचर्य है। जैन दार्शनिक ब्रह्मचर्य के लिए सभी प्रकार कामनाओं का पूर्ण परित्याग आवश्यक बतलाते हैं।

ये त्रिरत्न और पंचमध्वर ही मोक्ष मार्ग के साधन हैं। यहाँ ज्ञान एवं आचरण दोनों पर जोर दिया गया है क्योंकि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। अपर्युक्त मार्गों का पालन करते हुए मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। इस प्रकार कर्मों का पालन करते हुए मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। इस प्रकार कर्मों का पालन करते हुए मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। मोक्ष की अवस्था में जीव को अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त वीर्य और अनन्त सुख या शान्ति की प्राप्ति होती है।